# भारतीय भाषा व डॉ0 राम मनोहर लोहिया का समाजवाद एक अध्ययन

**संतोष कुमार**
शोधार्थी
इतिहास विभाग
बी0 आर0 ए0 बि0 यू0 मुजफ्फरपुर

**सारांश**

समाजवाद का उद्देश्य मानव का सर्वागीण विकास है जिसकी पूर्णता के लिए सांस्कृतिक गैर मानसिक विकास अत्यन्त आवश्यक है। मानव को मानसिक और सांस्कृतिक ढंग से विककसित करने के लिए भाषा का सर्वाधिक महत्व है। भाषा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्ति व्यक्ति तक पहुँचता है, ज्ञान का आदन–प्रदान होता है और अन्तर्निहित शक्तियों का विकास होता है।

**शब्द–कुंजीः** समाजवाद, इतिहास, सांस्कृतिक, सव्रज्ञात भाषा, अन्तर्निहित

**भूमिका**

भाषा और सव्रज्ञात भाषा के सर्वत्र प्रयोग से ही व्यक्ति का उत्थान होता है और व्यक्ति के उत्थान से राष्ट्र का उत्थान होता है। अपने सुख–दुःख और हृदय के उद्‌गार मातृभाष में ही अच्छी तरह से व्यक्त होते है और मातृभाषा ही व्यक्तियो को माँ की तरह पाल –पोष का आदर्श मानव बनाने में योग देती है दुर्भाग्य का विषय है कि भारत वर्ष में जनता की भाषा में काम काज न होकर एक विदेशी और चन्द लोगो की भाषा अंग्रेजी में होता है। अंग्रेजी में इस अधिकार प्रवेश के प रिणामस्वरूप साधारण व्यक्ति शासन, विधान, ज्ञान आदि के क्षेत्र से वंचित होने के कारण निर्भय और क्रियाशील जीवन व्यतीत नहीं कर पाता, न ही अंग्रेजी से कार्यकर्ताओ से अपनापन अनुभव कर सकने में समर्थ है। ऐसी स्थिति में शासक और शासित एक दूसरे के लिए अपरिचित बने रहते है और साथ ही देश वासियों के प्रति आत्मीय संबंध खो देते है। अतः यह एक वास्तविकता है कि अंग्रेजी के हटाये बिना जनतान्त्रिक समाजवादी संस्थाएँ भारत में उत्पन्न होना असम्भव है। डॉ0 लोहिया ने उचित ही कहा है ''अंग्रेजी के हटाये बिना सामाजवाद जनतंत्र और ईमानदारी के पहले कदम भी असम्भव है। 40 करोड़ हिन्दुस्तानियों के

लिए तीस लाख लोगो की अंग्रेजी एक गुप्त विद्या है जैसे टोना टोटका या भूत झाड़ने के इत्यादि गुप्त विद्याओं से किसी भी देश का नाश हुआ करता है। यह किंचित संतोष का विषय है कि अब इस और कुछ परिवर्तन हो रहा है।

डॉ0 लोहिया का मत है कि माध्यम के रूप में अंग्रेजी के प्रयोग से आर्थिक विकास अवरूद्ध होता है और भिक्षा के क्षेत्र में शोध एवं ज्ञानार्जन बहुत कम होता है प्रशासन की क्षमता, विषमता और भ्रष्टचार में भी अंग्रेजी का बहुत कुछ हाथ है। मातृभाषा को त्यागकर विदेशी भाषा अंग्रेजी का सत्कार राष्ट्रीय स्वाभिमान के विरूद्ध है जनतांत्रिक भाषा से राष्ट्रीय सुरक्षा भी जुड़ी हुई है। सेना के प्रत्येक बड़े और छोटे पदाधिकारी की भाषा एक ही होनी चाहिए। सैनिको और सामान्य जनता को उसकी भाषा देकर ही राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सक्षम और स्वाभिमानी बनाया जा सकता है। डॉ0 लोहिया ने स्पष्ट कहा है कि हिन्दी और अंग्रेजी किसी की मातृभाषा भिन्न हो तो उसका इस्तेमाल किये बिना हिन्दुस्तान के लोगों में कभी प्रतिष्ठा, व्यक्तित्व और आत्म सम्मान के गुण नहीं आ सकते। परन्तु दुर्भाग्य यह है कि अपने देश में विदेशी भाषा प्रगति की और अपनी भाषाएँ प्रतिक्रियावाद की प्रतीक समझी जाती है। अंग्रेजी के ज्ञात व्यक्ति ही उच्च पदाधिकारी होते है और वे अपने संबंधियो को नौकरियां दिलाकर विभिन्न कार्यालयों पर अपना अंग्रेजी प्रभुत्व बनाये रहते है। इन सबकी भाषा सामान्य जन की समझ के परे होती है। कानून और संविधान अंग्रेजी में होने के कारण जनता के लिए निष्प्रयोजनीय रहते है। न्याय और राजनैतिक चेतना उनके लिए विदेशी हो जाती है। मजदूरो की तरफ से उनके पेट के सवाल ऐसी भाषा में लिखे जाते है जिसे वे खुद नहीं समझाते। देशी भाषा का प्रयोग नहीं होता है। फलस्वरूप मजदुरो के अन्दर से नेता नहीं निकल सकते। जड़ की कट गयी। जमीन ही नही, जिस पर खड़े होकर मजदूर खुद नेता बने। [1]

ऐसी विषम स्थिति में निश्चित ही अंग्रेजी दासता की प्रतीक है। सांस्कृतिक एवं मानसिक विकास की प्रतीक मातृभाषा की अनुपस्थिति में आर्थिक समृद्धि अर्थहीन ही नहीं असम्भव भी होती है। क्योंकि सांस्कृतिक और आर्थिक समृद्धि, संस्कृति और रोटी अथवा मन और पेट एक ही सिक्के के दो पहलू है। एक के बिना दूसरे के अस्तित्व संभव नहीं। डॉ0 लोहिया का मत है, दिमाग और पेट अलग–अलग चींचे नहीं है एक ही चींज के दो हिस्से है। एक के बिन दूसरे का संतोष होना मुश्किल है। अंग्रेजी देश के दिमाग और पेट दोनों के लिए हानिप्रद है। अंग्रेजी केवल

विदेशी भाषा ही नहीं अपितु भारतीय प्रसंग में यह एक सामन्ती भाषा है जिसकी प्राधानता में भारतीय जनतंत्र कभी भी फल–फूल नहीं सकता।[2]

सामन्ती भाषा और लोक–भाषा डॉ0 लोहिया के मतानुसार भारत देश के सन्दर्भ मे सामन्ती का केवल अंग्रेजी में ही प्रतिबिम्बित नहीं उसकी परम्परा अति प्राचीन है। भारत के 1500 वर्ष के इतिहास अवलोकन से ज्ञात होता है कि यहां अनेक सामन्ती भाषाएँ और लोक–भाषाएँ बनती विगड़ती रही तथा अपने अपने अस्तित्व की प्रतिष्ठा के परिणामस्वरूप एक दूसरे से संघर्ष रही। भाषा के साथ एक और सामन्ती भूषा, सामन्ती भोजन और सामन्ती भवन रहा है तो दूसरी ओर लोक भूषा, लोक–भोजन, और लोक भवन रहा है डेढ़ हजार वर्ष पहले संस्कृत सामन्ती भाषा थी तथा प्राकृत, अपभ्रंश और पालि लोक भाषाएँ 800 या 700 वर्ष पूर्व अरबी सामन्ती भाषा थी तथा 200 वर्ष पूर्व फारसी सामान्ती भाषा थी और हिन्दी उर्दू तमिल बंगाली लोक भाषाएँ। डॉ0 लोहिया को संस्कृत के प्रति अगाध आस्थाा थी। वे इस भाषा को देशी और अधिकांश भाषाओं की जननी स्वीकार करते थे तथापि अंग्रेजी समाप्त करके जो व्यक्ति हिन्दी और अन्य क्षेत्रिय भाषाओं के स्थान पर संस्कृत लाना चाहते था उन्हे वे सामन्ती समझते थे। क्योंकि 40 करोड़ व्यक्तियों की भाषा हिन्दी की तुलना में संस्कृत तो पांच लाख लोगो की ही भाषा है संस्कृत से अंग्रेजी अधिक हानिकारक है क्योकि यह सामन्ती होने के साथ साथ विदेश भाषा भी है। डॉ0 लोहिया की मान्यता थी कि अंग्रेजी विश्व भाषा नहीं है। संसार की तीन अरब से अधिक जनसंख्या में तीस या पैतीस करोड़ व्यक्ति ही इस भाषा को सामान्य रूप में जानते है। संस्कृत, अरबी यूनानी भाषाएँ भी अपने समय में अंग्रेजी के समान उन्नत और विस्तृत थी। किन्तु जिस प्रकार ये भाषाएँ विश्व भाषाएँ बन सकी उसी प्रकार अंग्रेजी भी विश्व भाषा न बन सकेगी।[3]

डॉ लोहिया को भारत में अंग्रेजी की प्रतिष्ठा देखकर अत्यन्त आश्चर्य और दुःख होता था। उनका कहना था किवष्व में कोई भी सभ्य अथवा असभ्य देश ऐसा नहीं जिसकी व्यस्थापिकाओं न्याययालयें, प्रयोगशालाओं, उद्योगो, रेलवे और तार आदि सभी विभागों में विदेशी गैर सामन्ती भाषा अंग्रेजी का प्रयोग होता हो और जिससे 99 प्रतिशत व्यक्ति अनभिज्ञ है। भारत के तरह सार्वजनिक कार्यो में यदि अंग्रेजी के किसी देश ने अपनाया भी है तो केवल उस स्थिति में जबकि उसकी स्वयं की भाषाएं प्रायः लुप्त हो गयी। डॉ0 लोहिया का मत है कि अंग्रेजी रूप के द्वारा नहं बल्कि जनता विशेष रूप से निम्न माध्यम वर्ग, और किसानो की लम्बी लड़ाई के द्वारा ही भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। इन आजादी के संघर्षो ने राष्ट्रीय विषयों में हिन्दी का तथा प्रान्तीय विषयों में अपनी अपनी प्रान्तीय भाषाओं का प्रयोग किया। भारतीय जनता में

स्वतंत्रता की भावना और उसके लिए आन्दोलनो का सूत्रपात केवल महात्मा गांधी ने ही क्षेत्रीय मातृभाषाओं और हिन्दी में किया।[4]

डॉ0 लोहिया की मान्यता कि अंग्रजियत और सामन्ती प्रभाव के कारण आज अंग्रेजी के साथ धन प्रतिष्ठा, सत्ता और विलासिता बंधी हुई है। यह स्थिति भारतीय अपार जन समूह के लिए एक शाप से अधिक कुछ नहीं है। भारत अंग्रेजी भाषा के कारण गणित इंजीनियरिंग विज्ञान, शास्त्र ज्ञान आदि को सीमित कर रहा है। जबकि चीन जापान और रूस आदि देश अपनी निजी भाषाओं के द्वारा प्रत्येक क्षेत्र में ज्ञान का प्रसार कर रहे है। भाषा–भेद के कारण देश की राजनीति वर्ग राजनीति का गन्दा रूप धारण कर लेती है। जिसको समाप्त करना सामाजवादियों का प्रथम उद्देश्य है। डॉ0 लोहिया अंग्रेजी को समाप्त करना चाहते थे किन्तु उसके स्थान पर हिन्दी ही प्रतिष्ठित हो ऐसा उनका आग्रह न था। वे बहुधा कहा करते थे कि भाषा की समस्या को हिन्दी अंग्रेजी के सदर्भ में नहीं अपितु देशी भाषाएँ बनाम अंग्रेजी के सन्दर्भ में देखना चाहिए।[5]

***संदर्भ :–***


1. डॉ0 राम मनोहर लोहिया का जाति दर्शन–डॉ0 मदन मोहन पंडित जानकी प्रकाशन प्रथम संस्करण 2012, पटना पृष्ठ–46
2. डॉ0 राम मनोहर लोहिया का जाति दर्शन–डॉ0 मदन मोहन पंडित जानकी प्रकाशन प्रथम संस्करण 2012, पटना पृष्ठ–54
3. डॉ0 राम मनोहर लोहिया का सामाजिक दर्शन तारा चन्द दिक्षित, लोक भारती प्रकाशन प्रथम संस्करण–2013 पृष्ठ 61 इलाहाबाद
4. डॉ0 राम मनोहर लोहिया के विचार आंकार शरद लोक भारती प्रकाशन छठा संस्करण 2017
5- दैनिक पत्र–पत्रिका।